फास्फोरस एवं पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई के पूर्व खेत में आखिरी जुताई के समय डाल देनी चाहिए शेष नाइट्रोजन की मात्रा दो भागों में विभाजित कर बुवाई के 45 दिन बाद एवं पुष्पन से पूर्व खड़ी फसल में डालकर सिंचाई कर देना चाहिए।

सिचांई:- अजवायन एक सुखा रोधी फसल है। इसकी खेती असिंचित क्षेत्रों में संरक्षित नमी पर की जा सकती है। सिंचित फसल में 2 से 5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। फूल आने के बाद फसल मे पानी की कमी नहीं रखना चाहिए। सिंचित खेती में पानी के निकास हेतु उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

निदाई-गुड़ाई:- अजवायन फसल की प्रारम्भिक अवस्था में बढ़वार धीमी गति है होती है इसिलिए प्रथम निदाई-गुड़ाई बुवाई के 30 दिन तक कर लेनी चाहिए उसके पश्चात् आवश्यकतानुसार निदाई-गुडाई करते रहना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण के लिये पेंडामैथालिन 1 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर 500 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव बीज की बुवाई के पश्चात् करने से खरपतवार नियंत्रित किया जा सकता है।

कीट एवं रोग नियंत्रण:-

1.चेंपा:- अजवायन की फसल में फूल आने वाली अवस्था या उसके बाद यह कीट आक्रमण करता है। यह पौधों के कोमल भागों का रस चुसता है। इसके रोकथाम हेतु 0.03 प्रतिशत डॉइमेथोएट (30 ई.सी.) या फॉस्फामिडान का 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हैक्टर क्षैत्र मे छिड़काव करते है।

2. छाछया रोग:- इस रोग के प्रकोप से पत्तियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देने लगता है। इसकी रोकथाम हेतु 1 किलोग्राम घुलनशील गंधक या 500 मि.ली. कैराथेन या 700 ग्राम कैलेक्सिन का 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हैक्टर क्षैत्र में छिड़काव करने से रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

3 झुलसा:- फसल में पुष्पन शुरू होने के बाद अगर आकाश में बादल छाये हो तथा नमी बड जाए तो इस रोग की सम्भावना काफी बड जाती है। रोग की अवस्था मे रोगी पŸ❍❍यॉ झुलसी हुई दिखाई देती है। तथा पौधे में बीज नहीं बनते है। इसके रोकथाम हेतु फफूंदीनाशी डाइथेन एम - 45, डाईफोलेटान की 0.2 प्रतिशत मात्रा को 400 से 500 लीटर पानी का घोल बनाकर एक हैक्टर फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

कटाई:- अजवायन की फसल लगभग 160-170 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। जब बीजो के गुच्छो का रंग भूरा हो जाये तो फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। कटाई के पश्चात् इसकी छोटी - छोटी पूलियाँ बनाकर खलिहान मे सुखने के लिए रखते है। तथा समय - समय पर इन पुलियों को पलटा जाता है ताकी नमी के कारण दाने खराब न हों सूखी हुई पुलियों को जहां तक संभंव हो पक्के फर्श पर छिटक कर या डंडी से पीटकर दाने अलग कर लेते है।

उपज:- सिंचित क्षैत्र में 12-15 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व असिंचित क्षैत्र में 5-7 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है।

अजवायन बहु उपयोगी एवं मसाले वाली फसल है। इसका संबंध मनुष्य के स्वास्थ्य से प्राचीनकाल से जुड़ा है भारत में इसकी खेती उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान गुजरात में की जाती है।

मध्यप्रदेश में अजवायन की खेती मंदसौर, राजगढ़, शाजापुर, शिवपुरी, उज्जैन आदि जिलों में हो रही है। अजवायन का मध्यप्रदेश में कुल क्षैत्रफल लगभग 4876.05 हैक्टर व उत्पादन लगभग 4946.52 मिट्रिक टन है। जबकि भारत मे कुल क्षैत्रफल 35000 हैक्टेयर व उत्पादन लगभग 23000 मिट्रिक टन है।

जलवायु:- यह रबी की फसल है तथा कम वर्षा वाले क्षैत्रों में खरीफ मे भी की जाती है। इसकी खेती समशीतोष्ण जलवायु में होती है। पुष्पन के समय वातावरण में नमी की मात्रा अत्यधिक नहीं होनी चाहिए। फसल की बढ़वार के समय वातावरण का तापमान 15-27 डिग्री सेन्टीग्रेट एवं आपेक्षित आद्रता 65 प्रतिशत तक होनी चाहिए। दानें के विकास के समय हल्का गर्म मौसम की आवश्यकता होती है।

भूमि:- अजवायन की खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली बलुई दोमट तथा मटीयार भूमि उपयुक्त रहती है। जिसका पी एच मान 6-8 तक हो, इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है।

खेती की तैयारी:- बोनी से पहले खेत की जुताई करे जिससे मिट्टी भूरभूरी हो जाए और निंदा समाप्त हो जाए। हर जुताई के बाद पाटा चलाकर नमी का संरक्षण करते रहना चाहिए।

बीज की मात्रा:- एक हैक्टर क्षैत्र मे कतारे मे बुआई के लिए 2.5 - 4 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। बुवाई के लिए पंक्ति से पंक्ति की दुरी 30-40 सेमी. तथा पौधे से पौधे की दुरी 25 सेमी. रखनी चाहिए। बीज की गहराई 1 से 1.5 सेमी. से अधिक नहीं होना चाहिए।

बुवाई का समय:- अंसिचित क्षैत्रों में अजवायन की बुवाई अगस्त के अंतिम सप्ताह से सितम्बर तक कर देनी चाहिए तथा सिंचित क्षैत्रों में बुवाई का सर्वोत्तम समय अक्टूम्बर से नवम्बर है। यह एक लम्बी अवधि की फसल है जो 160 से 170 दिनो में पककर तैयार होती है।

उन्नत किस्मे:- एन आर सी एस एस ए ए - 1
एन आर सी एस एस ए ए - 2
लेम सिलेक्शन - 1
लेम सिलेक्शन - 2
आर ए 19 - 80
गुजरात अजवायन - 1

खाद एवं उर्वरक:- बुवाई के कम से कम एक माह पूर्व 20 - 25 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालकर एक साथ बिखेर कर खेत तैयार कर लेते है। गोबर की खाद के अतिरिक्त 40 किग्रा. नाइट्रोजन, 30 किग्रा. फास्फोरस तथा 20 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से डालना चाहिए।

क्रमांक: COOP/2023/KOTA/201080/23/1

एग्रीकल्चर फ़ोरम फॉर टेक्निकल एजुकेशन ऑफ़ फार्मिंग सोसायटी

कोटा, राजस्थान

अजवायन की उन्नत उत्पादन तकनीकी

संकलन

डॉ. रूपाली एवं डॉ. आई.एस. नरूका
पं.दीनदयाल उपाध्याय कृषि महाविद्यालय, देवली, टोंक, राजस्थान
प्रोफेसर, बागवानी, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर, एयू जोधपुर